ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 259-260**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept.2026

संस्कृत विषय की उपयोगिता – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

डॉ0 मनीषा त्रिपाठी
सहायक आचार्य– संस्कृत विभाग, गोरक्षपीठाधीश्वर महंत अवेधनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चौक बाजार, महाराजगंज (उ0प्र0) भारत

Received-15.08.2025, Revised-23.08.2025, Accepted-30.08.2025 **E-mail:manishamishra1811@gmail.com**

सारांशः संस्कृत केवल एक भाषा ही नहीं है, बल्कि यह भारत की बौद्धिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक यात्रा का मूल आधार है। दर्शन, गणित, खगोल विज्ञान, आयुर्वेद, तर्कशास्त्र और साहित्य के क्षेत्र में भारत का अधिकांश प्राचीन ज्ञान संस्कृत में ही लिपिबद्ध है। संस्कृत भाषा पृथ्वी की प्राचीनतम और परिष्कृत भाषा है। इसके निरंतर महत्व के बावजूद, आधुनिक भारत में संस्कृत के अध्ययन को कई चुनौतियों का सामना करना पडा है। इस शोध पत्र के माध्यम से यह जानने का प्रयास करेंगे कि संस्कृत भाषा का राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.इ.पी.) 2020 में क्या उपयोगिता है और संस्कृत भाषा का अध्ययन क्यों अत्यंत महत्वपूर्ण है?

कुंजीभूत शब्द–संस्कृत भाषा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी, पाण्डुलिपि, बौद्धिक, वैज्ञानिक औरसांस्कृतिक यात्रा, संस्कार, निर्मल दर्पण।

प्रस्तावना– सम् उपसर्ग पूर्वक कृ धातु से क्त प्रत्यय के योग से निष्पन्न हुई संस्कृत भाषा संसार की समस्त परिष्कृत भाषाओं में प्राचीनतम है। संस्कृत केवल मात्र एक भाषा ही नहीं है अपितु संस्कृत एक विचार और संस्कार भी है। भारतीय संस्कृति की प्राणस्वरूपा, भारतीय धर्म, दर्शन आदि का आधारपीठ तथा सर्वमान्य रूप में ग्रहण की गयी है। सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय, पुराण, स्मृतियाँ, रामायण, महाभारत, धर्मग्रन्थ, दर्शन, काव्य, महाकाव्य, नाटक, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य व्याकरण एवं ज्योतिष संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध होकर इसके गौरव का संवर्धन करते हैं, जो भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति और भारतीय धरोहर की रक्षा करने में पूर्णरूप से सहायक है। संस्कृत से सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है। जैसे वैदिक संस्कृति में गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त षोडश संस्कार का विधान है। संस्कार के द्वारा ही मानव शरीर और मन पवित्र होता है। पर्यावरण शुद्ध होता है। संस्कारों का वैज्ञानिक महत्व भी है। जिस प्रकार उदर के लिए भोजन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार नैतिक मूल्यों से ही मानव अपनी सभ्यता का परिचय देता है। संस्कृत साहित्य आध्यात्मिकता से अनुप्राणित सामाजिक आदर्शों का निर्मल दर्पण है।

संस्कृत केवल हमारी भाषा ही नहीं है, बल्कि हमारी जीती–जागती संस्कृति है, सभ्यता है, परम्परा है। संस्कृत के बाद बहुत सारी भाषाएं भारत में ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्व में आयीं और गयीं, लेकिन हमारे पूर्वजों के परिश्रम के कारण, संस्कृत आज भी न केवल जीवित है बल्कि नित् पुष्पित और पल्लवित भी हो रही है। संस्कृत साहित्य में ऐसे सुभाषितों की भरमार है, जो मनुष्य को सन्मार्ग पर प्रेरित कर उनकी सभी समस्याओं का समाधान करते हैं। जैसेः

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ॥

शास्त्रीय और आधुनिक रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी बहुभाषावाद को प्रासंगिक बताते हुए शिक्षा के क्षेत्र के सभी स्तरों पर संस्कृत को जीवन जीने की मुख्य धारा में शामिल कर अपनाने की बात पर भी बल दिया गया है। संस्कृत का अध्ययन कर छात्र–छात्राएं न केवल अपने–अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में सन्तुलित व्यवहार की ओर अग्रसर होंगे, अपितु भविष्य के प्रति भी उत्साहित होंगे। भारत के सांस्कृतिक धरोहर को संजोने और बढ़ावा देने साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति की दिशा में संस्कृत भाषा की अहम भूमिका होगी।

इस भाषा के वैज्ञानिकता का अध्ययन कर के ही अनुसन्धान एजेंसी नासा में 1987 ई० में ही संस्कृत को कम्प्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा घोषित कर दिया था। जिस कारण आज उस संस्था के द्वारा संस्कृत में निरन्तर शोध किए जा रहे हैं। पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने पाणिनीय व्याकरण को मानवीय बुद्धिमत्ता की सर्वोत्कृष्ट रचना कहा है। आज भी अमेरिका, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान आदि अनेक देश संस्कृत के क्षेत्र में निरन्तर उत्कृष्ट अनुसन्धान कार्य करके इसकी श्रीवृद्धि में प्रयत्नशील हैं। अमेरिका की सबसे बड़ी एजेंसी नासा ने संस्कृत भाषा को अन्तरिक्ष में मैसेज भेजने के लिए सबसे उपयोगी माना है, क्योंकि संस्कृत के वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते हैं। दुनिया की 97 प्रतिशत भाषाएं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संस्कृत से प्रभावित हैं। यह एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसे बोलने में जीभ की सभी संवेदनाओं का उपयोग होता है। अमेरिकन हिन्दू यूनिवर्सिटी के अनुसार संस्कृत बोलने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और रक्त का प्रवाह सन्तुलित होता है। नासा की एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका छठी और सातवीं पीढ़ी के ऐसे सुपर कम्प्यूटर तैयार कर रहा है, जो संस्कृत पर आधारित होंगे। संस्कृत की पाण्डुलिपियों पर शोध के लिए नासा में एक अलग विभाग बनाया गया है। नासा के पास ऐसी 60 हजार से ज्यादा पाण्डुलिपियाँ हैं। वहीं लंदन के जेम्स जूनियर स्कूल में सभी छात्रों के लिए संस्कृत की पढ़ाई अनिवार्य कर दिया गया है। कनाडा में पहली से आठवीं कक्षा तक संस्कृत भाषा की शिक्षा दी जा रही है। बोलचाल की भाषा में संस्कृत, भारत के संविधान में आठवीं अनुसूची में शामिल है, जबकि उत्तराखण्ड राज्य में इसे दूसरी राजकीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। इसके अलावा देश के कई हिस्सों में इसे सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में प्रयोग किया जाता है। कर्नाटक के मुत्तूर, मध्यप्रदेश के नरसिंहपुर जिले के मोहाद और राजगढ़ जिले के झिरी, राजस्थान के बूंदी जिले के कापेरान, बांसवाड़ा जिले के खाड़ा और गनोड़ा, उत्तर–प्रदेश के बागपत में बावली और ओडिशा के श्यामसुन्दरपुर गाँव में संस्कृत बोलचाल की भाषा है। संस्कृत भाषा में इतनी वैज्ञानिकता होने के कारण ही अमेरिका, रूस, स्वीडन, कनाडा, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, आस्ट्रिया देशों में नर्सरी से ही बच्चों को संस्कृत पढ़ाई जाने लगी है। आने वाले समय में संस्कृत वैश्विक भाषा बनने की ओर अग्रसर होगी।

अब ये हमारा कर्तव्य है कि हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के हाथों में भी यह संस्कृत जो कि न केवल प्राचीन भाषा है अपितु भारत की प्राचीनतम संस्कृति का भी वहन करती है। हम संस्कृत भाषा को न केवल संवर्धित तथा पोषित करें अपितु बहुत ही सुरक्षित रूप में अपनी सन्ततियों को सौपें तथा उनसे भी इसके संवर्धन, पोषण एवं सुरक्षा का वचन लें। जब यह परम्परा चल पड़ेगी तो निश्चित रूप से भारत स्वर्णस्थल को प्राप्त होगा, क्योंकि यदि इतिहास पलटकर देखा जाय तो हम पाते हैं कि जिन्होनें भी अपनी प्राचीन संस्कृति, परम्परा तथा भाषा को छोड़ा, उनका समूल नाश हो गया। जैसे प्राचीन यूनान, मिश्र, रोम आदि ने अपनी संस्कृति, सभ्यता तथा भाषा को छोड़ दिया था जिसका कारण यह है कि आज उनकी सभ्यताओं का कुछ भी अवशेष नहीं है।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept.2026

संस्कृत भाषा में भारत की सांस्कृतिक विरासत सुरक्षित है और इसलिए इस पर ध्यान देना स्वाभाविक है। संस्कृत की उपेक्षा हमें उस विरासत से अलग कर देती है जिसका ज्ञान एक भारतीय होने के नातें हमें अति आवश्यक है। संस्कृत भाषा का आज की दौर में बहुत बड़ा महत्व है, इसका अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि संस्कृत एक अद्वितीय शब्द वाला भाषा है इसमें आने वाले प्रत्येक शब्दों का केवल एक ही सटीक उत्तर होता है इसके महत्ता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि आज नासा संस्कृत भाषा में प्रोग्रामिंग कर रहा है तथा वैदिक युग में प्रादुर्भूत हुई संस्कृत वाङ्मय की धारा आज तक अविच्छिन्न गति से प्रवाहित हो रही है। संस्कृत एक तरफ हमें प्राचीन जड़ों से जोड़ती है तो दूसरी तरफ इसमें समकालीन और भविष्य की जरूरतों को भी साकार करने की सम्भावना है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.इ.पी.) 2020 का एक महत्वपूर्ण बिन्दु है– स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों में भारतीय भाषाओं को शिक्षण के माध्यम के रूप में अधिकाधिक समाहित करने के प्रयास किए जाएंगे। इन आधुनिक पाठ्यक्रमों में पठन–पाठन सामग्री के लिए पारिभाषिक शब्दावलियों की आवश्यकता पड़ेगी, इस कार्य में संस्कृत बहुत ही मददगार साबित होगी।

आज संस्कृत का ज्ञान इसलिए भी आवश्यक है कि प्राचीन भारतीय ज्ञान – विज्ञान जैसे– आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, निर्माण कला अथवा वैदिक गणित आदि के साथ– साथ भारतीय संस्कृति का प्रामाणिक रूप सामने आ सके। संस्कृत के ज्ञान के अभाव में यूरोपीय ही नहीं बल्कि भारतीय इतिहासकारों तक ने प्राचीन काल की अनेक व्याख्याओं में अर्थ का अनर्थ कर दिया है। इसके अतिरिक्त भविष्य की प्रौद्योगिक कृत्रिम बुद्विमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंसी) के लिए भी संस्कृत बहुत ही उपयोगी है।

किसी भी समाज, राष्ट्र की प्रतिष्ठा में उसके गौरवशाली अतीत की भी बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सर्वे भवन्तु सुखिनः एवं वसुधैव कुटुम्बकम् के उद्घोषकर्ता भारत के इस महान अतीत को प्रकाशित करने का दायित्व संस्कृत का ही होगा। आज स्कूली शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक में संस्कृत भाषा को समाहित करने की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में परिकल्पना है क्योंकि सही अर्थों में संस्कृत केवल एक भाषा नहीं अपितु एक पूरी संस्कृति है, एक दृष्टि है जिसमें विश्व कल्याण की कामना है।

अतः उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि यदि संस्कृत भाषा का गहनता से अध्ययन किया जाय तो यह भाषा भारत को विश्वगुरू एवं एक बार पुनः सोने की चिड़िया बनाने में अग्रसर होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. यास्क – निरुक्त।
2. महोपनिषद्।
3. यास्क – निरुक्त।
4. पाणिनि – अष्टाध्यायी।
5. व्याकरण सिद्धान्त कौमुदी।
6. मनीषा तन्त्रः – प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली पारम्परिक संस्कृत ग्रन्थ संग्रह से प्राप्त प्रकाशन।
7. मिनिस्ट्री ऑफ एजूकेशन नेशनल एजूकेशन पॉलिसी 2020 (इन्टरनेट) www.education.gov.in
8. www.worldbank.org
9. www.sanskritkauday.com

*****